International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 26-06-2022, Accepted: 12-07-2022, Published: 30-07-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 97-98

मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. कोंडा चन्द्रा
सहायक आचार्य, एस. टी. एस. एन सरकारी स्नातक कॉलेज, कदिरी, श्री सत्य साई जिला, आंध्र प्रदेश, भारत

सारांश
साठोत्तरी महिला लेखिकाओं में मृदुला जी अपनी सृजन प्रक्रिया में बहुत ही चर्चित लेखिका हैं। अपने साहित्य से वे खुद पहचानी जाती है। इसलिए उनको 'बोल्ड करार लेखिका' कहा गया है। गर्ग जी दृद्तापूर्वक स्पष्ट रूप से अपनी बात कहने में माहिर हैं। उन्होने अपने साहित्य में आज के टूटते सामाजिक परिवेश में जीवन की परिवर्तनशीलता और समाज की नई जीवनदृदृष्टि को अभिव्यक्ति दी है।समाज की कटु अनुभूतियों को विशेष प्रामाणिक चित्रण करने की अपनी अलग विशेषता समझी है। महिला शोषण के साथ ही साथ पुरुष होशन का भी जिक्र करनेवाली लेखिकाओं में आप सबसे प्रथम सृजंकर्त्री मानी जाती है।

मूल शब्दः व्यक्तित्व, विडंबना, परिवर्तनशील, विलायती, शोषण

प्रस्तावना
सरस्वती की वरदपुत्री मृदुला गर्ग के व्यक्तित्व को पहचानना हो तो उनके सम्पूर्ण साहित्य निधि को पढ़ना अनिवार्य है। उनकी रचनाओं में देश–विदेश की कहानियों को यथारूप से अंकित किया गया है। अमीर–गरीब, पूंजीपति, धनवान से लेकर रास्ते में दो वक्त की रोटी के लिए भीख मांगते घूमनेवालों तक की कहानियां पाठक को मिलेंगी। उनके साहित्य में केवल स्त्री ही शोषित नहीं बल्कि, पुरुष का शोषण भी खुले आम चित्रित हुआ है। तमाम विचारों को देखने पर हर एक पाठक, मृदुला जी के व्यक्तित्व को पहचान लेता है।

मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व
साठोत्तरी महिला लेखिकाओं में सुपरिचित मृदुला गर्ग जी दृढ़ता पूर्वक स्पष्ट रूप से अपनी बात कहने में माहिर हैं। मृदुला गर्ग को विमर्षकों ने 'बोल्ड करार' की संज्ञा दी है। संसार में प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अलग–अलग रूप से देखने को मिलता है। कला अपनी बहुमुखी आभा का दर्शन करवाती है। लेखक अपनी रचनाओं में अपना जीवन नहीं लिखता, वह अपने जीवन को छोड़कर भी कुछ लिख पाना उसके लिए कठिन होता है। वैसे ही मन की तलब सच्चाई को शब्दों में बदलनेवाली और बेजुबान भावनाओं को जुबान देने का प्रयास करनेवाली साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं में प्रप्रथम बहुभाषा विज्ञ, कुशल अभिनेत्री, सफल रंगमंच निर्देशिका, अपूर्व शैलीकार और असंख्य–लेखों–निबंधों, नाटकों, एवम कहानी, उपन्यासों की रचयित्री आदि सब को मिलाकर जो व्यक्तित्व बनता है उसका नाम है मृदुला गर्ग। "व्यक्तित्व' किसी व्यक्ति के समूचे रूप को अपनी निजी विशिष्टता एवम पृथकता के साथ मूर्तित करते हैं।" प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व छंद विशेषताओं से जुड़ा रहता है। एक विद्वान ने कहा है – बदलते हुए परिवेश के साथ शारीरिक एवम मानसिक रीत्या सतत परिवर्तित होना ही व्यक्तित्व है । "और एक विद्वान, समाज में व्यक्ति के पात्र और स्थान की ओर इशारा करते हुए व्यक्तित्व की परिभाषा दी है –" व्यक्तित्व यानी समाज में व्यक्ति के सभी पात्रों और स्थानों को निर्धारित करनेवाले पाठकों का सम्मिलन है। अतः इसकी व्याख्या सामाजिक प्रभाव हो सकता है।"
मृदुला गर्ग जी का जन्म 24 अक्तूबर 1938 को पश्चिम बंगाल के सुप्रसिद्ध कोल्कत्ता शहर के अमीर परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री बिरेन्द्र प्रसाद जैन और माता का नाम रवीकान्ता था।उन्होने अर्थशास्त्र में एम॰ए॰ किया है। आप तीन साल तक अध्यापिका के रूप में काम किया है। 1963 में मृदुला जी का विवाह श्री आनंद प्रकाश गर्ग जी के साथ सम्पन्न हुआ है। विवाह के बाद मृदुला जैन मृदुला गर्ग बन गई है।
जब इस धरती पर इंसान का पैदाइश होने लगी, उस समय से व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का प्रदर्शन करता आया है। गौतम बुद्ध, चंद्रगुप्त, अशो, गांधी, अंबेडकर आदि महापुरुषों ने युग–युगांतर से व्यक्ति का निर्माण करते आए हैं। व्यक्तित्व वह एक चमकता हुआ प्रकाशमान है, जो आसमान में चांद–सूरज,तारे चमकते हैं। वैसे ही साहित्य में भी हर लेखक–लेखिकाओं का व्यक्तित्व अलग–अलग रहता है। इस व्यक्तित्व के संबंध में एक विदेशी विद्वान का कहना है– "व्यक्ति की समस्त प्रकृतियों, प्रेरणाओं, प्रवृत्तियों, आवश्यकताओं एवम अनुभवजन्य विकसित मानसिक दशाओं का कुलयोग ही व्यक्तित्व है। "व्यक्तित्व को अंग्रेजी में 'पर्सनालिति' कहते है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व की ओर संकेत करता है। समाज में आम आदमी का भी व्यक्तित्व बहुत ही महत्व का होता है। परंतु वह कलम की धार नहीं चलाता, सिर्फ उसकी मुस्कान ही उसकी पहचान बन जाती है। फिर भी उतना प्रसिद्ध नहीं होता, जितना लेखक या साहित्यकार बनता है। वे एक ऐसे इंसान हैं जिनकी सहृदयता समूची मानवता को प्राप्त है। साहित्य में अस्त–व्यस्त, समय के पाबंद,गोल जीवन के इर्द–गिर्द, समाज के मेल उठाव, निम्न मध्यवर्गीय लोगों के दुख दर्द को अपने साथ जोड़कर उसे एक नाम देकर लिखना पसंद करती हैं। महिला शोषण के साथ ही साथ पुरुष शोषण का भी जिक्र करनेवाली लेखिकाओं में आप सब से प्रथम सृजनकत्री मानी जाती है। इंसान के हर मुसीबत को लेकर उनके कथा–साहित्य में बहुत ही विस्तृत रूप से देखने को मिलता है। अशिक्षित से लेकर सुशिक्षित

तक, बाल्यावस्था से लेकर प्रौदावस्था तक,युवावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक हर चेहरे को धागे में मोती पिरोए जैसे उनकी कहानियों में यथावत चित्रण किया गया है। मृदुला गर्ग जी का व्यक्तित्व व्यक्ति से समाज, राष्ट्रीयता से अन्तर्राष्ट्रीय तक पहुंचा है।

मृदुला गर्ग का कृतित्व

साहित्य में नए–नए प्रयोग करनेवाली साठोत्तरी महिला लेखिकाओं में सुप्रसिद्ध बहुचर्चित कथा–लेखिका हैं मृदुला गर्ग। मृदुला गर्ग जी ने हिंदी साहित्य क्षेत्र में लगभग सभी विधाओं में अपना स्थान जमाया है। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, अनुवाद साहित्य आदि क्षेत्र में अपनी रचनाशीलता का परिचय दिया है। उनके सम्पूर्ण कथा–साहित्य को देखने से पता चलता है कि वे ज्यादातर कहानीकार के रूप से ही पहचानी जाती है।कथानक की आवश्यकता को समझते हुए डॉ. भागीरथ मिश्र जी लिखते हैं–– स्वातंत्र्योत्तर युग में देशीय कथाओं के साथ विलायती कथाओं को मिलाकर लिखनेवाली लेखिकाओं में सब से पहले मृदुला गर्ग का नाम लिया जाता है। उनके उपन्यासों में किसी परिवेश का मोहताज नहीं है। उनके उपन्यासों में नारी और पुरुष दोनों शोषित हैं। नारी की छटपटाहट नए पुराने रिश्तों के संबंध आदि प्रमुख घटनाओं को अपने उपन्यासों में दर्शाएं हैं। 'उसके हिस्से की धूप, वंशज, चित्तकोबरा, अनित्य, मैं और मैं, और कटगुलाब' आदि की छः उपन्यास हैं। मृदुला गर्ग का पहला उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' है। यह उपन्यास त्रिकोणात्मक प्रेम कहानी है जिसमें न संघर्ष रहता है और न ही ईर्ष्या नजर आती है। केवल शांतिचित्त प्रेम भावना का व्याख्यान है।

साठोत्तरी कहानी आंदोलन में खासकर लेखिकाओं में आनेवाली मृदुला गर्ग जी युगीन समस्याओं का सांगोपांग चित्रण किया है। उपन्यास साहित्य से कहानी साहित्य में उनको बहुत ही प्रसिद्ध मिली। उन्होंने अपनी कहानियों में व्यक्तिपरक तकलीफ का अंकन किया है– कितनी कैदे, टुकड़ा–टुकड़ा आदमी, डेफोडिल जल रहे हैं, ग्लेशियर से, उर्फ सैम, शहर के नाम, समागम आदि उनके कुल सात कहानी संग्रह है। सामाजिक विडंबना, आर्थिक संत्रास, स्त्री शोषण, काला बाजारी, स्त्री–पुरुष के बीच बच्चे के जन्म की समस्या आदि को लेकर एक सजीव चित्रण मृदुला गर्ग जी की कहानियों में मिलता है। इसीलिए मृदुला जी को साठोत्तरी लेखिकाओ में ही' 'बोल्ड करार' की संज्ञा दी गई है। गर्ग जी कहानी संग्रह में कामोत्तेजना, बलात्कार, अत्याचार आदि को देखने से पता चलता है कि भारतीय स्त्री–पुरुष में विलायती जोश का प्रादुर्भाव है।

मृदुलाजी ने नाटक साहित्य भी रचा है।–– एक और अजनबी, जादू का कालीन, तीन कैदे । और उनके निबंध संग्रह में –– रंग–ढंग, चूकते नही सवाल। मृदुला जी एक सफल अनुवादक भी हैं। उनकी अनुदित कृत्तियां ––

1. चित्तकोबर– जर्मन में अनुदित है।
2. उसके हिस्से की धूप–स्वयं ने अंग्रेजी में अनुवाद किया है।
3. डैफोडिल जल रहे है–स्वयं लेखिका ने अंग्रेजी में अनुवाद किया है।

मृदुला जी को उनके साहित्यिक सेवा के लिए अनेकों पुरस्कार मिले–– साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिन्दी अकादमी दिल्ली, सहिया भूषण, व्यास सम्मान, राम मनोहर लोहिया आदि मिले।

मृदुला गर्ग जी ने समाज सेविका के रूप में भी काम किया है। उन्होंने चंद महिलाओं को साथ लेकर एक संघ बनाए जिसके माध्यम से, बहुत सारे उजड़े हुए घरों को फिर से बसाने का काम किया है। महिलाओं को अधिकार दिलाना, उनके साथ हुए अन्यायों के खिलाफ लेखिका ने आवाज उठाई है। आर्थिक रूप से धन सहाय करने के लिए महिला संघ के द्वारा नाटक के टिकट बेचकर बिहार के अकाल पीड़ितों की मदद की है। सन 1971 में मृदुला जी ने कर्नाटक के बागलकोट शहर में बच्चों के लिए एक प्राथमिक स्कूल भी खोला था। उनमें भारत के विभिन्न प्रदेशों से आए कर्मचारियों के बच्चे अलग–अलग भाषा बोलते थे। वह स्कूल अब भी वहां चल रही है। यहां समाज के हर वर्ग का बच्चा पढ़ने आता था। इसलिए ऊंच–नीच भी–भाव का नाम ही नहीं उठता था।

निष्कर्ष

मृदुला गर्ग जी का साहित्य सृजन उनके चिंतन–मनन के अनुरूप है। उनका चिंतन अधिक सच्चा, कालसापेक्ष है जो उनकी कृतियों में फुट पड़ा है। गर्ग जी का मनोजगत मानवतावाद तथा आधुनिकता की यथार्थ – दृष्टि के मिले–जुले तत्वो से निर्मित है। अतः गर्ग जी का साहित्य कुचली हुई नारी और पुरुष–वर्चस्व के इस समाज में नारी की वास्तविक स्थिति के अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेज़ हैं।

संदर्भ सूची

1. चर्चित महिला कथाकारों की कहानियाँ – सं॰ दिनेश द्विवेदी।
2. समकालीन हिन्दी कहानी का सफर – बलराम
3. मैं और मैं – नेशनल पब्लिकेशिंग हाउस, नई दिल्ली
4. नई कहानी में आधुनिकता बोध – डॉ॰ साधना शाह